हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

टेस्ट-VIII (प्रश्नपत्र-2)

DTVF/18(JS)-HL-**HL8**

निर्धारित समय: तीन घंटे *Time allowed: Three Hours*	*अधिकतम अंक: 250* *Maximum Marks: 250*

नाम (Name): Devendra Pralash Meena

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ ✓ नहीं

मोबाइल नं. (Mobile No.): _____

ई-मेल पता (E-mail address): _____

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 8 & 04/03/18

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2018] [Roll No. UPSC (Pre) Exam-2018]:

1	1	1	3	4	4	8

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature): Dmeen

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

*There are **FIVE** questions divided in **TWO SECTIONS.***

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** question from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answer must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): _____ टिप्पणी (Remarks): _____

मूल्यांकनकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Evaluator (Code & Signatures)

पुनरीक्षणकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Reviewer (Code & Signatures)

मूल्यांकन की पद्धति

प्रिय अभ्यर्थियों,

आपकी उत्तर-पुस्तिकाओं का मूल्यांकन करते हुए परीक्षक-समूह के सदस्य निम्नलिखित निर्देशों का ध्यान रखते हैं। आप भी इन्हें ध्यान से पढ़ें ताकि आप अपने प्राप्तांकों का तार्किक कारण समझ सकें।

परीक्षकों के लिये निर्देश

1. मूल्यांकन में अंकों का वही स्तर रखा जाना चाहिये जैसा संघ लोक सेवा आयोग (UPSC) के परीक्षकों द्वारा रखा जाता है।
2. सामान्य अध्ययन का जो उत्तर हर दृष्टिकोण से सटीक व उत्कृष्ट है; उसे अधिकतम 60% अंक दिये जाने चाहियें क्योंकि आयोग द्वारा किये जाने वाले मूल्यांकन में भी इससे अधिक अंक मिलना लगभग असंभव है। वैकल्पिक विषयों के उत्कृष्ट उत्तरों तथा श्रेष्ठतम निबंधों में अधिकतम 70% तक अंक दिये जा सकते हैं।
3. कृपया अंकों का वितरण निम्नलिखित तालिका के अनुसार करें-

उत्तर का स्तर (Standards of Answer)	सामान्य अध्ययन में अंक-स्तर (Marks Standard G.S.)	वैकल्पिक विषय तथा निबंध में अंक-स्तर (Marks Standard - Optional Subject and Essay)
उत्कृष्ट (Excellent)	51-60%	61-70%
बहुत अच्छा (Very Good)	41-50%	51-60%
अच्छा (Good)	31-40%	41-50%
औसत (Average)	21-30%	31-40%
कमज़ोर (Poor)	0-20%	0-30%

4. कृपया उत्तर में निम्नलिखित गुणों को विशेष प्रोत्साहन दें-
   - प्रश्न की सटीक समझ व उत्तर की व्यवस्थित रूपरेखा
   - संक्षिप्त, टू-द-पॉइंट लेखन शैली
   - प्रामाणिक तथ्यों का समुचित उपयोग
   - अधिकतम ज़रूरी बिंदुओं का समावेश
   - सरकारी दस्तावेज़ों (मंत्रालयों/आयोगों की रिपोर्ट्स, पॉलिसी पेपर्स आदि) के संदर्भों की चर्चा
   - प्रभावी भूमिका व निष्कर्ष
   - समकालीन घटनाओं/प्रसंगों को उत्तर से जोड़ना
   - दृष्टिकोण में संतुलन, समावेशन व गहराई
   - अच्छी, साफ-सुथरी हैंडराइटिंग
   - भाषा में प्रवाह
   - आवश्यकतानुसार डायग्राम्स, नक्शों आदि का प्रयोग
   - तकनीकी शब्दावली का सटीक उपयोग
   - सुंदर प्रस्तुति शैली (छोटे पैराग्राफ्स रखना, महत्त्वपूर्ण शब्दों को अंडरलाइन करना आदि)
   - विराम चिह्नों का समुचित प्रयोग
   - भाषा में वर्तनी व व्याकरण की शुद्धता
5. टॉपर्स के अनुभव बताते हैं कि उत्तर की विषयवस्तु अच्छी होने पर आयोग के परीक्षक शब्द-सीमा के थोड़े बहुत उल्लंघन पर अंक नहीं काटते हैं। कृपया आप भी इसी दृष्टिकोण के अनुसार अंक-निर्धारण करें।

Method of Evaluation

Dear Candidates,

While assessing your answer-scripts, the evaluators are required to follow the given instructions. You should also read them carefully to understand the logic behind the marks obtained by you in the tests.

Instructions for the Evaluators

1. The level of marks while evaluating the answers should be kept as per UPSC (Union Public Service Commission) standards as far as possible.
2. The answers of General Studies which are accurate and excellent from every perspective should be awarded a maximum of 60% marks as it is almost impossible to get more than that in actual UPSC examination. Excellent answers in optional subjects and the best written essays can be awarded a maximum of 70% marks.
3. Please assign the marks according to the following table-

4. Please devote special attention to the following qualities in an answer–
   - Accurate understanding of the question and systematic presentation of the answer
   - Crisp and to the point writing style
   - Adequate use of authentic facts
   - Inclusion of all the important points
   - Citing of relevant facts and figures from relevant official documents (Ministries /Commissions Reports, Policy Papers etc.)
   - Effective introduction and conclusion
   - Linking of current events and situations with the answer
   - Balance and depth in answer-writing
   - Legible and clean handwriting
   - Flow of language
   - Use of diagrams, maps etc
   - Precise use of technical terminology
   - Beautiful presentation style (small paragraphs, underlining important words etc.)
   - Proper use of punctuations
   - Correct spellings and right use of grammar
5. Experience of UPSC toppers also indicates that if the content of the answer is good, the UPSC examiners do not cut the marks on slight violations of the word-limit. Please award marks strictly according to the above-mentioned instructions.

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

1. निम्नलिखित काव्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके काव्य-सौंदर्य का परिचय दीजिये: $10 \times 5 = 50$

(क) रघुनायक आगे अवनी पर नवनीत-चरण,
श्लथ धनु-गुण है, कटिबन्ध स्रस्त-तूणीर-धरण,
दृढ़ जटा-मुकुट हो विपर्यस्त प्रतिलट से खुल
फैला पृष्ठ पर, बाहुओं पर, वक्ष पर, विपुल
उतरा ज्यों दुर्गम पर्वत पर नैशान्धकार,
चमकतीं दूर ताराएँ ज्यों हो कहीं पार।

संदर्भ - प्रस्तुत पद्यांश रामभक्ति काव्यधारा के सर्वश्रेष्ठ कवि तुलसीदास द्वारा रचित 'कवितावली' के ~~उत्तरकांड से लिया गया~~ है।

संदर्भ - प्रस्तुत पद्यांश छायावाद के प्रमुख कवि निराला की लंबी कविता 'राम की शक्ति-पूजा' से लिया गया है।

इसमें निराला युद्ध के प्रथम दिन लौट रही राम की सेना का चित्रण प्रस्तुत कर रहे है, जिसमें नेतृत्वकर्ता के रूप में राम चल रहे है।

व्याख्या : रावण से युद्ध के प्रथम दिन की समाप्ति के पश्चात, निराश लौटते राम एवं उनकी सेना अपने शिविर में आ रही

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

है। उनके धनुष को उन्होंने कंधे पर टांग दिया है, जो शिथिल अवस्था में है। उनकी दृढ़ जटा खुल गई है, जिससे बाल उनकी बाहु, वक्ष पर फैल गये हैं, जिससे ऐसा प्रतीत होता है, जैसे अंधकार उनके कंधे पर विराजमान हो गया है।

विशेष -

① प्रस्तुत पद्यांश राम की मानसिक स्थिति की निराशा को भी व्यक्त करता है।

② निराला ने अन्यत्र भी राम के इसी निराशा भाव को प्रकट करते हुये लिखा है-

"है अमानिशा उगलता गगन घन अंधकार।"

③ निराला ने राम की शक्तिपूजा में रामत्व एवं रावणत्व का अनन्त संघर्ष प्रस्तुत किया है, जिसकी झलक इन पंक्तियों में दिखाई देती है कि सत्य परेशान हो सकता है पराजित नहीं।

④ & निराला की भाषा खड़ी बोली तत्सम है, जो काव्यात्मक गुणों से युक्त है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) अबे, सुन बे, गुलाब,
भूल मत जो पाई खुशबू, रंगोआब,
खून चूसा खाद का तूने अशिष्ट,
डाल पर इतराता है केपीटलिस्ट!
कितनों को तूने बनाया है गुलाम,
माली कर रक्खा, सहाया जाड़ा-धाम।

संदर्भ - प्रस्तुत पद्यांश छायावाद के श्रेष्ठ कवि महाप्राण 'निराला' की कविता 'कुकुरमुत्ता' से लिया गया है।

इस पद्यांश में कुकुरमुत्ता गुलाब पर सुविधाभोगी होने का आक्षेप लगाता है।

व्याख्या - कुकुरमुत्ता आक्षेप लगाते हुये कहता है कि ~~अबे~~ गुलाब तुम सुविधा सम्पन्न होने के कारण मुझसे श्रेष्ठ हो, तुम्हारी सुविधाओं के कारण तुम खुशबू से युक्त हो, इसी से लोग तुम्हारी ओर आकर्षित होते है। पूँजीवादी मनुष्य की श्रेष्ठता तुम शोषण के द्वारा ही महान बने हो क्योंकि पूँजीवाद की नींव ही शोषक - ~~शोष्य~~ शोषित पर टिकी है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this sp

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष -

① प्रस्तुत कविता निराला की छायावादी कविताओं के विपरीत प्रकृति की है किन्तु यह उनकी एक स्वाभाविक विकास यात्रा का परिचायक है।

② प्रस्तुत पंक्तियाँ बाहरी कलेवर में समाजवाद से प्रेरित लगती है किन्तु मूलतः समाजवाद से प्रेरित नहीं है, रामविलास शर्मा के शब्दों में कुकुरमुत्ता 'लुम्पेन प्रोलिटेरियट' है।

③ प्रस्तुत कविता में निराला ने अनुभूति तथा अभिव्यक्ति के स्तर पर नवाचार किया है। अनुभूति के स्तर पर छायावादी प्रतीकों से परे वे गंदगी को भी देखते है वहीं अभिव्यक्ति के स्तर पर ~~देशज~~ भदेस भाषा का प्रयोग करते है

④ भाषा विभिन्न शब्दों के समन्वय से निर्मित है। जैसे -

अशिष्ट - तत्सम खड़ी बोली
कैपीटलिस्ट - अंग्रेजी

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) ओ चिंता की पहली रेखा, अरी विश्व-वन की व्याली,
ज्वालामुखी स्फोट के भीषण, प्रथम कंप-सी मतवाली!
हे अभाव की चपल बालिके, री ललाट की खल लेखा!
हरी-भरी-सी दौड़-धूप, ओ जल-माया की चल-रेखा!

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ - प्रस्तुत पद्यावतरण छायावाद के प्रमुख कवि जयशंकर प्रसाद की कृति 'कामायनी' से अवतरित है। कामायनी को आधुनिक काल का सर्वश्रेष्ठ महाकाव्य होने का गौरव प्राप्त है।

इन पंक्तियों में प्रसाद जी मनु द्वारा चिंता सर्ग में चिंता के संदर्भ में व्यक्त विचारों को प्रस्तुत किया है।

व्याख्या - प्रलय के पश्चात् हिमालय पर चिंतापुत्र मनु कहता है कि हे! चिन्ता तुम मेरे मस्तिष्क पर उत्पन्न प्रथम रेखा हो क्योंकि यह देव प्रजाति का है किन्तु तुम ज्वालामुखी विस्फोट के समान कंपन करने वाली तथा वन में सर्पिणी के समान भ्रमण करने वाली हो।

तुम अभाव की चंचल बालिका हो अर्थात् अभावग्रस्तता ही चिंता की जननी है। तुम ललाट

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

पर एक दुष्ट रेखा के समान हो। किन्तु तुम थोड़ी आशावादी भी हो क्योंकि चिंता युक्त व्यक्ति मृग मरीचिका की भाँति परिश्रम करता रहता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष

① प्रस्तुत पंक्तियों में चिंता की विशेषताओं का वर्णन किया गया है।

② जयशंकर प्रसाद ने मनु के माध्यम से चिंता का गहन मनोवैज्ञानिक विश्लेषण प्रस्तुत किया है।

③ प्रसाद की भाषा में प्रसादगुण का अभाव रहता है किन्तु यहाँ प्रसाद गुण की पर्याप्त उपस्थिति है।

④ उपमा अलंकार का सुन्दर प्रयोग है।

प्रासंगिकता - प्रस्तुत पंक्तियाँ वर्तमान में भी उतनी ही अधिक प्रासंगिक है क्योंकि वर्तमान विश्व चिंता के कारण अवसादग्रस्त होता जा रहा है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) सहसा वीणा झनझना उठी–
संगीतकार की आँखों में ठण्डी पिघली ज्वाला-सी झलक गयी–
रोमांच एक बिजली-सा सब के तन में दौड़ गया।
अवतरित हुआ संगीत
स्वयम्भू
जिस में सोता है अखण्ड
ब्रह्मा का मौन
अशेष प्रभामय।
डूब गये सब एक साथ।
सब अलग-अलग एकाकी पार तिरे।

संदर्भ - प्रस्तुत पद्यांश प्रयोगवाद के प्रणेता 'अज्ञेय' की कविता 'असाध्य वीणा' से अवतरित है। 'असाध्य वीणा' सृजनात्मक का सूक्ष्म विश्लेषण प्रस्तुत करती है।

इन पंक्तियों में प्रियंवद द्वारा वीणा वादन का चित्रण हुआ है।

व्याख्या - प्रस्तुत पंक्तियों में अज्ञेय कहते हैं कि प्रियंवद जैसे ही मौन साधना में रत हुआ अचानक वीणा स्वतः बजने लगी। वीणा के स्वर स्फुरन से प्रियंवद ने चैन की साँस ली और उत्साह से युक्त हो गया। वीणा से संगीत उत्पन्न होना एक प्रकार से

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this sp

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

ब्रह्म की अनुभूति के समान था। इस संगीत से सभी श्रोतागण आनन्द में डूब गये तथा अपने-अपने स्वधर्म के अनुसार इसका अर्थग्रहण किया।

विशेष

① प्रस्तुत पंक्तियों में a जैन बौद्धमत का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

" अवतरित हुआ संगीत
स्वयंभू।"

② इन पंक्तियों में अस्तित्ववादी दर्शन के स्वधर्म की झलक भी दिखाई देती है।

" डूब गये सब एक साथ
सब अलग-अलग एकाकी पार तिरे।"

③ इस पंक्ति की भाषा 'अज्ञेय' की विशेष भाषा जो स्वर से मौन तथा मौन से स्वर के बीच का अनुभव कराती है, है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) जाने दो वह कवि-कल्पित था,
मैंने तो भीषण जाड़ों में
नभ-चुंबी कैलाश शीर्ष पर,
महामेघ को झंझानिल से
गरज-गरज भिड़ते देखा है,
बादल को घिरते देखा है

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this spa

संदर्भ - प्रस्तुत पद्यांश आधुनिक कबीर एवं जनकवि की उपाधि से सुशोभित 'नागार्जुन' की कविता 'बादलों को घिरते देखा है' से लिया गया है।

इन पंक्तियों में नागार्जुन आँखों देखे यथार्थ का वर्णन प्रस्तुत करते है।

व्याख्या - नागार्जुन हिमालय के संदर्भ में की गई सभी कल्पनाओं का खंडन करते हुये कहते है कि उन्होंने भीषण जाड़ों में वहाँ किसी काल्पनिक ईश्वर के निवास की बजाय झंझावतों को तथा गरजते बादलों को देखा है। उनका संदर्भ निराला तथा प्रसाद द्वारा की गई कल्पनाओं के खंडन से है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष -

नागार्जुन ने इन पंक्तियों से पूर्व लिखा है -

" कहाँ गया वह धनपति कुबेर
कहाँ गई उसकी वह अलका।"

तथा अपने यथार्थ के द्वारा उनका खंडन किया है।

② नागार्जुन भी कबीर की भाँति आँखों देखी पर यकीन करते है, जो उनको जनकवि बनाती है। कबीर भी कहते है -

तू कहता कागद की लेखी,
मै कहता आँखन की देखी।"

③ कुछ मार्क्सवादी कवि 'बादलों को घिरते देखा है' को क्रांति चेतना से युक्त होने का दावा करते है।

④ बादलों को घिरते देखा है में नागार्जुन यांत्रिक मार्क्सवाद का खंडन करते हुये गेहूँ तथा गुलाब दोनो के महत्त्व को स्वीकार करते है।

⑤ पद्यांश की भाषा तत्सम की ओली है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

2. निम्नलिखित काव्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके काव्य-सौंदर्य का परिचय दीजिये: $10 \times 5 = 50$

(क) बिरह भुवंगम तन बसै, मंत्र न लागै कोइ।
राम बियोगी ना जिवै, जिवै त बीरा होई।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this sp

संदर्भ - प्रस्तुत साखी संतकाव्यधारा के सर्वश्रेष्ठ कवि 'कबीर' की वाणियों के संकलन 'कबीर ग्रंथावली' (श्याम सुन्दरदास) के 'विरह कौ अंग' से ली गई है।

इन पंक्तियों में कबीर जीवात्मा के विरह का वर्णन करते है।

व्याख्या - कबीर जीवात्मा के विरह का वर्णन करते हुये लिखते है कि विरह एक साँप की भाँति उसके शरीर में बस गया है, जिस पर कोई मंत्र कार्य नहीं कर रहा। आगे कबीर कहते है कि जीवात्मा अपने प्रियतम के वियोग में नहीं जी सकती है और जीने पर वह पागल हो जायेगी।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष

(1) विरह का ऐसा ही वर्णन कबीर ने अन्यत्र भी किया है -

" विरहणी ऊभी पंथ सिरि,
पंथी बूझै धाइ।
एक सबद कहि पीव का
कबहै मिलेंगे आइ।"

(2) विरह का उच्चस्तर मीरा के काव्य में भी दिखाई देता है -

" हे री मैं तो दरद दीवानी,
मेरो दरद न जानो कोई।"

(3) उक्त साखी की भाषा सधुक्कड़ी भाषा है। कबीर लोकभाषा का समर्थन करते हुये कहते है -

संस्किरत है कूप जल, भाखा बहता नीर।"

(4) साखी (दोहा) छंद का प्रयोग है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) भई पुछार, लीन्ह बनवासू। बैरिनि सवति दीन्ह चिलवाँसू।
होइ खर बान बिरह तनु लागा। जौ पिउ आवै उड़हि तौ कागा।।
हारिल भई पंथ मैं सेवा। अब तहँ पठवौं कौन परेवा?।।
धौरी पंडुक कहु पिउ नाऊँ। जौं चित रोख न दूसर ठाऊँ।।
जाहि बया होइ पिउ कँठ लवा। करै मेराव साइ गौरवा।।
कोइल भई पुकारति रही। महरि पुकारै 'लेइ लेइ दही'।।
पेड़ तिलोरी औ जल हंसा। हिरदय पैठि बिरह कटनूंसा।।
जेहि पंखी के निअर होइ, कहै बिरहै के बात।
सोई पंखी जाइ जरि, तरिवर होइ निपात।।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ - प्रस्तुत पद्यांश अवधी के अरवान जायसी कृत 'पद्मावत' के 'नागमती वियोग' खंड से अवतरित है।

इन पंक्तियों में नागमती अपने विरह अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन कर रही है।

व्याख्या - नागमती अपने विरह का वर्णन करते हुये कहती है कि अपने प्रियतम को ढूँढने के लिए उसने वनवास धारण कर लिया है। किन्तु उसकी सौंत ने घात पता की है जिससे कोई भी कौआ संदेश लेकर वापस नहीं आता। अब वह थक कर हार गई है।

नागमती विरह के कारण सफेद हो गई है। बिना प्रियतम के विरह स्वी पर नर

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इसे कंठ से लगा रहा है। हे प्रियतम तुम आकर मुझे कंठ से लगाकर मुझे गौरव प्रदान करो।

नागमती कोयल की भाँति विरह में चीखती रहती है। उसके हृदय में विरह ने वास बना लिया है।

नागमती जिस भी पक्षी से अपना विरह की बात करती है वह जलकर भस्म हो जाता है। इसी तरह वृक्ष भी जलकर भस्म हो जाते है।

विशेष

① जायसी की विशिष्टता विरह का 'बारहमासा' वर्णन है -

" जेठ जरै जग बहै लुवारा। उठै बवंडर धिकै पहारा
चारिहूँ पवन झकोरे आगि। लंका दाहि पलंका लागि।"

② विरह में प्रकृति का उद्दीपन विभाव सूर की गोपियों के यहाँ भी दिखाई देता है-

" बिन गोपाल बैरिन भई कुंज।"

③ जायसी ने ठेठ अवधी का प्रयोग किया है, जिसकी प्रशंसा शुक्ल जी ने माधुर्य भाषा के रूप में की है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) अँखियाँ हरि-दरसन की भूखी।
कैसे रहैं रूपरसराची ये बतियाँ सुनि रूखी।।
अवधि गनत इकटक मग जोवत तब एती नहिं झूखी।
अब इन जोग सँदेसन ऊधो अति अकुलानी दूखी।।
बारक वह मुख फेरि दिखाओ दुहि पय पिवत पतूखी।
सूर सिकत हठि नाव चलायो ये सरिता हैं सूखी।।

संदर्भ - प्रस्तुत पद्यांश कृष्ण भक्ति काव्यधारा के पुरोधा 'सूरदास' के पदों के संकलन 'भ्रमरगीतसार' (आचार्य शुक्ल) से लिया गया है।

इन पंक्तियों में गोपियाँ उद्धव से अपने विरह का वर्णन करती है।

व्याख्या - गोपिया उद्धव से कहती है कि उनकी आँखे श्रीकृष्ण के दर्शन की इच्छा रखती है। उनकी चितवनी छवि के बिना ये तुम्हारी बातें भी रूखी है। जब से श्रीकृष्ण गये है तब से ये नेत्र एकटक उनकी राह देखते है। और उपर से तुम्हारा यह जोग संदेश हमें व्याकुल कर रहा है। हम तो पुनः श्रीकृष्ण की वह छवि देखना चाहती

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this sp

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

है जब वे गाय का दूध दुहकर पात्रों के पात्र में पीते थे। तुम्हारा यह योग मार्ग सूखी सरिता मे नाव चलाने जैसा है।

विशेष -

① गोपियाँ श्रीकृष्ण के प्रति अपना प्रेम अन्यत्र भी दर्शाती है -

" उर में माखन चोर गड़े,
अबहूँ कैसे निकसति नाहि,
तिरछे ज्यूँ है अड़े।"

② योगमार्ग का विरोध सूरदास ने अन्यत्र भी किया है -

" आयो घोष बड़ो व्यापारी,
लादि खेप गुन, ज्ञान, जोग की,
ब्रज में आन उतारी।"

③ योगमार्ग का विरोध तुलसी तथा कबीर ने भी किया है।

④ सूरदास की भाषा ब्रज भाषा है, जिसके संदर्भ में शुक्ल जी ने किसी चलती परम्परा का पूर्ण विकास कहा है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) दिन दिन दूनो देखि दारिद दुकाल दुख,
दुरित दुराज, सुख सुकृत सकोचु है।
माँगे पैंत पावत पचारि पातकी प्रचंड,
काल की करालता भले को होत पोचु है।
आपने तौ एक अवलंब अंब डिंभ ज्यों,
समर्थ सीतानाथ सब संकट-बिमोचु है।
'तुलसी' की साहसी सराहिये कृपालु, राम!
नाम के भरोसे परिनामु को निसोचु है।।

संदर्भ - प्रस्तुत पद्यांश रामभक्ति काव्यधारा के श्रेष्ठ कवि 'तुलसीदास' कृत कवितावली के उत्तरकांड से लिया गया है।

इन पंक्तियों में तुलसीदास ने कलियुग की अवधारणा प्रस्तुत की है।

व्याख्या - तुलसी कहते है कि कलियुग में दुख, दरिद्र, अकाल, बुरा राज बढ़ रहा है। यह कलियुग सभ्य लोगो के लिए हानिकारक है तथा दुष्ट लोग डरा-धमका कर राज कर रहे है।

जिस प्रकार गर्भस्थ शिशु का अवलंब उसकी माता होती है, उसी तरह तुलसी स्वयं के सहारे श्रीराम को बताते है। तुलसी कहते है कि

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this sp

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

वे ~~कुछ~~ सीता के पति श्री राम की आराधना बिना किसी संकोच के करते हैं।

<u>विशेष</u> :

① कलियुग की अवधारणा तुलसी ने अन्यत्र भी प्रकट की है -

कलि बारहि बार दुकाल पड़ै।
बिनु ~~अन्न~~ अन्न दुखी सब लोग मरै।'

② कलियुग के विपरीत तुलसी ने रामराज्य की अवधारणा भी दी है -

"दैहिक, दैविक, भौतिक तापा,
रामराज्य काहुँ नहीं व्यापा।"

③ पद्यांश के अंत में तुलसी की <u>दास्य भक्ति</u> को प्रकट किया है। वे अन्यत्र भी कहते हैं -

"राम सो बड़ो है कौन, मोसो कौन छोटो।"

④ प्रस्तुत पद्यांश की भाषा <u>अवधी</u> है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) चमक, तमक, हाँसी, ससक, मसक, झपट, लपटानि।

ए जिहिं रति, सो रति मुकति, और मुकति अति हानि।।

कृपया इस स्थान कुछ न लिखें।
(Please don't wri anything in this

संदर्भ - प्रस्तुत दोहा रीतिकाल के श्रेष्ठ कवि बिहारीदास के दोहे के संकलन 'बिहारी रत्नाकर' (जगन्नाथ रत्नाकर) से लिया गया है।

इस दोहे में बिहारी रति क्रीड़ा तथा मुक्ति को संबंधित करते है।

व्याख्या - बिहारी कहते है कि जिस रति क्रीड़ा में चमक हो, हास्य हो, सिसकियाँ हो, मसक (दबाना), लपट-झपट हो, वह रति क्रीड़ा ही मुक्ति के समान है अन्य कोई भी मुक्ति, परम मुक्ति नहीं है।

इन पंक्तियों में बिहारी इहलौकिक भोगात्मक शृंगार के द्वारा मुक्ति का संबंध स्पष्ट करते है।

निष्कर्ष -

① बिहारी का यह दोहा रीतिकालीन देहात्मक

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

शृंगार की मानसिकता को व्यक्त करता है। वे अन्यत्र भी लिखते हैं -

" अंग-अंग नग जगमगति दीपशिखा सी देह।"

(2) भोगमूलक मुक्ति का यही प्रसंग सिद्धों के पंचमकार ~~सिद्ध~~ साधना में भी दृष्टिगत होता है किन्तु सिद्धों के यहाँ यह साधन रूप में थी जबकि रीतिकाल में साध्य रूप में।

(3) ~~बिहारी~~ बिहारी ने अपनी भाषा की ~~समास~~ समास क्षमता तथा भावों की समाहार क्षमता का अद्भुत प्रदर्शन किया है। अन्यत्र भी प्रसंग है -

" कहत, नटत, रीझत, खिजत,
मिलत, खिलत, लजियात।
भरे भौन में करत है,
नैनन ही सौं बात।।

(4) बिहारी की भाषा ब्रजभाषा है, जिसकी प्रशंसा जार्ज ग्रियर्सन ने भी की है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

3. निम्नलिखित काव्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके काव्य-सौंदर्य का परिचय दीजिये: 10 × 5 = 50

(क) उत्थान के पीछे पतन सम्भव सदा है सर्वथा,
प्रौढ़त्व के पीछे स्वयं वृद्धत्व होता है यथा।
हाँ! किन्तु अवनति भी हमारी है समुन्नति-सी बड़ी,
जैसी बढ़ी थी पूर्णिमा वैसी अमावस्या पड़ी!

संदर्भ - प्रस्तुत पद्यांश नवजागरण चेतना के शिखर 'मैथिलीशरण गुप्त' की कविता 'भारत-भारती' से लिया गया है।

इन पंक्तियों में कवि भारत की अवनति को स्पष्ट करते हैं।

व्याख्या - कवि कहते हैं कि उत्कर्ष पर पहुँचने के बाद ही पतन की ओर आना पड़ता है क्योंकि युवावस्था के पश्चात् वृद्धावस्था होती है।

हमारी अर्थात् भारत की अवनति अधिक विकट इसलिए है क्योंकि इसकी उन्नति भी उच्चतम थी। जैसे पूर्णिमा के पश्चात् अमावस्या होती है।

कृपया इस स्थान कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष

कवि की नवजागरण चेतना को अन्यत्र भी देखा जा सकता है -

" संसार को पहले हमीं ने ज्ञान शिक्षा दान की।"

(2) ऐसी ही नवजागरण चेतना भारतेन्दु तथा जयशंकर प्रसाद के काव्य में भी दिखाई देती है।

(3) व्यावहारिक उदाहरणों के द्वारा गहरे प्रसंग को समझाया गया है।

(4) पद्यांश में अभिधात्मकता तथा गद्यात्मकता का प्रस्तुतीकरण है।

(5) गुप्त जी की भाषा के संबंध मे उन्होंने स्वयं लिखा है -

" है भव्य भारत ही मातृभूमि हमारी हरी भरी.
हिन्दी है राष्ट्रभाषा. लिपि देवनागरी।"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) नील परिधान बीच सुकुमार खुल रहा
मृदुल अधखुला अंग,
खिला हो ज्यों बिजली का फूल
मेघवन बीच गुलाबी रंग।

कृपया इस स्थान
कुछ न लिखें।
(Please don't wri
anything in this s

संदर्भ - प्रस्तुत पद्यांश छायावाद के शिखर कवि 'जयशंकर प्रसाद' के महाकाव्य 'कामायनी' से अवतरित है।

इन पंक्तियों में प्रसाद ने श्रद्धा के सौंदर्य का बहुत ही सुन्दर वर्णन किया है।

व्याख्या - प्रसाद श्रद्धा के सौंदर्य का वर्णन करते हुये कहते हैं कि श्रद्धा का सौंदर्य नीले आसमान में जैसे बिजली का गुलाबी रंग का फूल हो वैसा है। अर्थात नीले वस्त्रों के बीच श्रद्धा का सौंदर्य गुलाबी रंग में दिखाई देता हुआ, बिजली के समान चमक रहा है।

विशेष -

① प्रसाद ने श्रद्धा का सौंदर्य वर्णन छायावादी सौंदर्य जो कि पवित्र है, उसी रूप में

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

किया है।

(2) छायावाद में प्रकृति का मानवीकरण हुआ है, उसकी झलक दिखाई देती है।

(3) उक्त पद्यांश की भाषा तत्सम की बोली है, जो सहज तथा प्रसाद गुण से युक्त है।

(4) उपमा अलंकार का बहुत ही सुन्दर प्रयोग हुआ है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) यह निवृत्ति है ग्लानि, पलायन
का यह कुत्सित क्रम है,
नि:श्रेयस यह श्रमित, पराजित,
विजित बुद्धि का भ्रम है।
इसे दीखती मुक्ति रोर से,
श्रवण मूँद लेने में,
और दहन से परित्राण-पथ
पीठ फेर देने में।

संदर्भ - प्रस्तुत पंक्तियाँ प्रगतिवादी कवि रामधारी सिंह 'दिनकर' की कविता 'कुरुक्षेत्र' से अवतरित है।

इन पंक्तियों में भीष्म अर्जुन के प्रश्न का जवाब दे रहे है।

व्याख्या - भीष्म अर्जुन के प्रश्न के जवाब में अपना पुरुषदर्शन प्रस्तुत करते हुये कहते है कि तुम्हारा यह पलायन भाव एक बुरा कर्म है। भले ही यह विजय तुम्हारी दूर हो किन्तु यह केवल तुम्हारा भ्रम है।

यह कि पलायन उसी तरह है जैसे

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

तेज आवाज में कान बंद कर लेना अथवा अग्निपुष्प मार्ग को परिवर्तित कर लेना।

विशेष

① इन पंक्तियों में दिनकर ने स्वयं का युद्ध-दर्शन प्रस्तुत किया है।

② चूंकि दिनकर प्रगतिवादी कवि है अतः वे कुरुक्षेत्र में मानववादी दर्शन की स्थापना भी करते है।

③ पद्यांश की भाषा तत्सम खड़ी बोली है। कुछ कठिन शब्दों का प्रयोग प्रसाद गुण में बाधक है। जैसे -
- विजित
- परित्राण - पथ

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(घ) ...ये गरजती, गूँजती, आंदोलिता
गहराइयों से उठ रहीं ध्वनियाँ, अत:
उद्भ्रांत शब्दों के नए आवर्त में
हर शब्द निज प्रति-शब्द को भी काटता,
वह रूप अपने बिंब से ही जूझ
विकृताकार-कृति
है बन रहा
ध्वनि लड़ रही अपनी प्रतिध्वनि से यहाँ।

संदर्भ - प्रस्तुत पंक्तियाँ ~~हिन्द~~ फैंटेसी के सूत्रधार कवि 'मुक्तिबोध' की कविता ब्रह्मराक्षस से ली गई है।

इन पंक्तियों में ब्रह्मराक्षस द्वारा बावड़ी में की जा रही आवाजों को अंकित किया गया है।

व्याख्या - बावड़ी के अंधेरे में ब्रह्मराक्षस स्वयं के पापों को मिटाने के लिए अपनी देह तथा पंजों को धो रहा है, जिससे अनेक प्रकार की ध्वनियाँ उत्पन्न हो रही है। इन ध्वनियों से इनकी प्रतिध्वनियाँ टकराकर नवीन ध्वनियों का सृजन करती है

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष

(1) उक्त पंक्तियाँ ब्रह्मराक्षस की मानसिक स्थिति को दर्शाती है, जो 'मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी का कार्य' नहीं कर पाने के कारण दुखी है।

(2) वास्तव में ये पंक्तियाँ स्वयं मुक्तिबोध के आत्मसंघर्ष को दर्शाती है।

(3) इसी आंतरिक संघर्ष को अन्यत्र भी दिखाया गया है -

" खूब ऊँचा जीना साँवला,
उसकी अंधेरी सीढ़ियाँ,
वे अभ्यान्तर निराले लोक की।"

(4) उक्त पद्यांश में बिम्ब धर्मता का सुन्दर चित्रण है

(5) मुक्तिबोध की भाषा के संदर्भ में नामवर सिंह ने कहा है कि यह कलात्मक नहीं, काव्य भाषा है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) कई दिनों तक चूल्हा रोया, चक्की रही उदास
कई दिनों तक कानी कुतिया सोई उनके पास
कई दिनों तक लगी भीत पर छिपकलियों की गश्त
कई दिनों तक चूहों की भी हालत रही शिकस्त

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ - प्रस्तुत पंक्तियाँ आधुनिक जनकवि नागार्जुन की छोटी कविता 'अकाल और उसके बाद' से ली गई है।

इन पंक्तियों में नागार्जुन ने मानव तथा मानवेतर प्रकृति पर अकाल का प्रभाव स्पष्ट किया है।

व्याख्या - नागार्जुन लिखते हैं कि अकाल के कारण चूल्हे पर खाना नहीं बन पाने के वह कई दिनों तक रोया तथा भूख के कारण कानी कुतिया उसके पास बैठी रही।

छिपकलियाँ भी खाने अन्न के दीवार पर घूम रही हैं तथा चूहे भी भूख के मारे दुखित होकर बैठे हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

① विशेष

प्रस्तुत पंक्तियाँ नागार्जुन की मानवेतर प्राणियों के प्रति संवेदना दर्शाती है।

② अकाल का ऐसा ही वर्णन तुलसी के यहाँ भी है -

"कलि बारहि बार दुकाल पड़ै।
बिनु अन्न दुखी सब लोग मरै।"

③ प्रस्तुत पंक्तियाँ छायावादी औदात्य का भंजन करती हुई 'कानी कुतिया' को कविता का हिस्सा बनाती है।

④ नागार्जुन की भाषा की सहजता उन्हे कबीर की भाँति जनकवि बनाती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this spa

4. निम्नलिखित गद्यांशों की संदर्भ सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके रचनात्मक सौंदर्य का परिचय दीजिये: $10 \times 5 = 5$

(क) लेकिन धरती माता अभी स्वर्णांचला है! गेहूँ की सुनहली बालियों से भरे हुए खेतों में पुरवैया हवा लहरें पैदा करती है। सारे गाँव के लोग खेतों में हैं। मानो सोने की नदी में, कमर-भर सुनहले पानी में सारे गाँव के लोग क्रीड़ा कर रहे हैं। सुनहली लहरें।! ताड़ के पेड़ों की पंक्तियाँ झरबेरी का जंगल, कोठी का बाग, कमल के पत्तों से भरे हुए कमला नदी के गड्ढे! डॉक्टर को सभी चीजें नई लगती हैं। कोयल की कूक ने डॉक्टर के दिल में कभी हूक पैदा नहीं की। किंतु खेतों में गेहूँ काटते हुए मजदूरों की 'चैती' में आधी रात को कूकनेवाली कोयल के गले की मिठास का अनुभव वह करने लगा है।

संदर्भ - प्रस्तुत गद्यांश आंचलिक उपन्यासधारा के शिखर 'फणीश्वरनाथ रेणु' के उपन्यास 'मैला आँचल' से लिया गया है।

इन पंक्तियों में डॉक्टर प्रशांत द्वारा पहली बार गाँव का दर्शन किये जाने का वर्णन है।

व्याख्या - डॉक्टर प्रशांत जब पूर्णिया जिले के मेरीगंज गाँव पहुँचता है तब सुनहरी गेहूँ की बालियों को देखकर सोचता है कि भारत माता अभी भी सोने की चिड़िया ही है। पके हुये गेहूँ के खेत में किसान काम कर रहे है। उसे अपने शहरी जीवन की कृत्रिमता के आगे यहाँ की प्राकृतिक सुन्दरता श्रेष्ठ लगी। कोयल

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

का मधुर गान पूर्व से अधिक सरस तथा मधुर लगा।

विशेष -

① रेणु ने आंचलिक उपन्यास की आंचलिकता को बनाये रखते हुये प्राकृतिक एवं भौगोलिक वर्णन प्रस्तुत किया है।

② शहरी जीवन की कृत्रिमता तथा ग्रामीण जीवन की मधुरता का चित्रण प्रेमचन्द ने 'गोदान' में किया है।

③ पंक्तियों की भाषा सहज तथा सुपाठ्य है। कहीं-कहीं आंचलिक शब्दों का प्रयोग हुआ है। जैसे - पुरवैया, झरबेरी, चैती

④ स्वर्णांचला - स्वर्ण रूपी अंचल (कर्मधारय समास)

प्रासंगिकता - वर्तमान समय में सरकार ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए इसी तरह ग्रामीण सौंदर्य का प्रस्तुतीकरण कर रही है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) महाराज, शास्तरों में तो आत्मा-परमात्मा के ही मन्तर लिखे हुए रहते हैं न? आपके चरणों का सेवक ठहरा, दो-चार मन्तर मेरे अपवित्तर कानों में भी पड़ जायें, तो मेरी आत्मा का मैल भी छँट जाये। क्या करूँ, गुसाईं! घास खाने वाले पशु बैल नहीं हुए, अनाज खाने वाला पशु किसनाराम ही हो गया..... महाराज, मरने के बाद आत्मा कहीं परलोक को चली जाती है या इसी लोक में भटकती रह जाती है?

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space

संदर्भ - प्रस्तुत गद्यांश ~~आधुनिक~~ नई कहानियों के प्रतिनिधि संकलन 'एक दुनिया समानान्तर' (राजेन्द्र यादव) की कहानी पेटमुक्ति (शैलेश मटियानी) से लिया गया है।

इन पंक्तियों में किसनाराम पंडित से अपनी मुक्ति के लिए कुछ मंत्र सुनने की इच्छा जताता है।

व्याख्या - किसनराम कहता है कि वह आपके चरणों का दास है, अतः कुछ शास्त्रीय मंत्रों का उच्चारण कर उसे भी सुना दीजिए ताकि पवित्र मंत्रों से उसका भी उद्धार हो जाये। उसे यह भ्रांति है कि यदि मंत्र नहीं सुने गये तो उसकी आत्मा की मुक्ति नहीं होगी तथा वह इसी लोक में ही रह जायेगी।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विश्लेषण

प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से लेखक शास्त्रों में वर्णित आडम्बरों के प्रति लोगों की सोच को दर्शाते हैं कि किस तरह वर्ग भेद को संस्थागत बना दिया गया है।

② ऐसा ही प्रसंग प्रेमचन्द की कहानी 'सद्गति' में भी है, जहाँ भी एक दलित हीनता बोध से ग्रस्त है -

"यह पंडित के घर को अपवित्र करने का फल है।"

③ उक्त पंक्तियाँ गद्य व्यंग्य क्षमता से युक्त है।

④ पंक्तियों की भाषा सहज, सुपाठ्य है।

प्रासंगिकता - वर्तमान में दलित समाज का शोषण इन्हीं शास्त्रों के आधार पर होता है, जिसका परित्याग किया जाना आवश्यक है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) अन्न पर स्वत्व है भूखों का और धन पर स्वत्व है देशवासियों का। प्रकृति ने उन्हें हमारे लिये–हम भूखों के लिये–रख छोड़ा है। वह थाती है, उसे लौटाने में इतनी कुटिलता! विलास के लिये उनके पास पुष्कल धन है और दरिद्रों के लिये नहीं?

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ - प्रस्तुत गद्य पंक्तियाँ नवजागरण चेतना के प्रतीक जयशंकर प्रसाद के उपन्यास समुद्रगुप्त से ली गई है।

इन पंक्तियों में सम्पत्ति पर राष्ट्र के निवासियों के अधिकार की बात कही है।

व्याख्या - प्रसाद लिखते है कि राष्ट्र में उत्पादित अन्न पर राष्ट्रवासियों तथा भूखों का स्वामित्व है न कि उसे बड़े-बड़े भंडारों में रखने वाले व्यापारियों का। प्रकृति ने सम्पूर्ण उत्पादन सभी लोगो के लिए उत्पादित किया है न कि कुछ लोगो के समूह के लिए। अतः उसे सहर्ष लौटा दिया जाना चाहिए क्योंकि दरिद्रों के पास विलास की वस्तु तो दूर की बात है, उनके पास अन्न भी नहीं है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

व्याख्या -

उक्त पंक्तियों में प्रसाद राष्ट्रवाद की उस अवधारणा का खंडन करते हैं, जो वर्गीय चरित्र से युक्त है।

② यहाँ वर्णित समस्या उत्पादन की नहीं बल्कि वितरण की असमानता है, ऐसा ही प्रसंग गुप्त की भारत भारती, प्रेमचन्द के गोदान एवं रेणु के मैला आँचल में भी है।

③ प्रस्तुत गद्यांश की भाषा तत्सम प्रधान बोली है।

प्रासंगिकता - प्रस्तुत पंक्तियाँ वर्तमान संदर्भ में भी उतनी ही अधिक प्रासंगिक है। हाल में ऑक्सफैम की रिपोर्ट के अनुसार शीर्ष 1% भारतीयों के पास नीचे के 67 करोड़ से भी अधिक सम्पत्ति है। यह असमानता समाप्त होनी चाहिए।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) राजनीति साहित्य नहीं है, उसमें एक-एक क्षण का महत्त्व है। कभी एक क्षण के लिये भी चूक जाएँ तो बहुत बड़ा अनिष्ट हो सकता है। राजनीतिक जीवन की धुरी में बने रहने के लिये व्यक्ति को बहुत जागरूक रहना पड़ता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ - प्रस्तुत पंक्तियाँ नवलेखन दौर के सर्वश्रेष्ठ लेखक 'मोहन राकेश' के नाटक 'आषाढ़ का एक दिन' से अवतरित है।

इन पंक्तियों में विपंगुमंजरी राजनीति का महत्त्व स्पष्ट करती है।

व्याख्या - विपंगुमंजरी, मल्लिका को समझाते हुये कहती है कि कालिदास यहाँ रुक नहीं सकते क्योंकि राजनीति में क्षणिक परिवर्तन होते रहते है, जिसके कारण एक क्षण में बहुत बड़ा अनिष्ट हो सकता है। अतः एक राजनीतिज्ञ को अपने समय का बहुत ही सधा हुआ प्रबंध करना पड़ता है। राजनीति में प्रत्येक क्षण की खबर रखनी होती है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष

राजनीति का महत्व बड़े ही सीधे रूप में व्यक्त किया गया है।

(2) राजनीति में क्षण का महत्व 'मन्नू भंडारी' के ~~उपन्यास~~ 'महाभोज' में भी वर्णित है।

(3) मोहन राकेश ने सूत्र भाषा का सधा हुआ प्रयोग किया है। जैसे-

"राजनीति साहित्य नहीं है, उसमें एक-एक क्षण का महत्व है।"

प्रासंगिकता - प्रस्तुत पंक्तियाँ वर्तमान समय में भी उतनी ही अधिक प्रासंगिकता रखती है क्योंकि राजनीति किसी भी काल-स्थान से निरपेक्ष रहती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) जीना चाहते हो? कठोर पाषाण को भेदकर, पाताल की छाती चीरकर अपना भोग्य संग्रह करो; वायुमंडल को चूसकर, झंझा-तूफान को रगड़कर, अपना प्राप्य वसूल लो; आकाश को चूमकर, अवकाश की लहरों में झूमकर, उल्लास खींच लो।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ - प्रस्तुत गद्यांश हिन्दी के श्रेष्ठ ललित निबंधकार 'हजारी प्रसाद द्विवेदी' के निबंध 'कुटज' से लिया गया है।

इन पंक्तियों में द्विवेदी जी जीवन जीने के संघर्ष को दर्शाते है।

व्याख्या - द्विवेदी जी कुटज के कठोर परिस्थितियों में रहते हुये भी जीवन जीने की अदम्य जिजीविषा को संदर्भित करते हुये मानव को भी सलाह देते है कि परिस्थितियाँ कितनी भी कठोर क्यों न हो उसे उन परिस्थितियों से लड़कर अपना जीवन जीना चाहिए। परिस्थितियों को बाधक की बजाय साधन के रूप में प्रयुक्त करने की क्षमता होनी चाहिए।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष -

'कुटज' के कवि जीवन संदेश को उभारा गया है।

(2) द्विवेदी जी मानव को जीवन का संदेश देते हुये कहते हैं

"सब कुछ में मिलावट है, शुद्ध है केवल मानव की जिजीविषा।"

(3) उपदेशात्मक शैली में सहज भाषा का प्रयोग किया है।

प्रासंगिकता - प्रस्तुत पंक्तियाँ परिस्थितियों से डर कर बैठने की बजाय आत्मविश्वास से युक्त होने का संदेश देती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

5. निम्नलिखित गद्यांशों की संदर्भ सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके रचनात्मक सौंदर्य का परिचय दीजिये: 10 × 5 = 5

(क) जिस प्रकार आत्मा की मुक्तावस्था ज्ञानदशा कहलाती है, उसी प्रकार हृदय की मुक्तावस्था रसदशा कहलाती है। हृदय की इसी मुक्ति की साधना के लिये मनुष्य की वाणी जो शब्द-विधान करती आई है, उसे कविता कहते हैं। इस साधना को हम भावयोग कहते हैं और कर्मयोग एवं ज्ञानयोग के समकक्ष मानते हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ - प्रस्तुत गद्यांश हिन्दी निबंध लेखन के शिखर 'आचार्य शुक्ल के निबंध संग्रह चिंतामणि में संकलित निबंध 'कविता क्या है' से अवतरित है।

इसमें शुक्ल जी ने कविता की परिभाषा तथा गुणों को वर्णित किया है।

व्याख्या - शुक्ल जी कविता के गुणों के संदर्भ में वर्णन करते हुये कहते है कि कविता मानव हृदय को बाहरी आवरणों से दूर करती हुई एक मुक्त दशा की ओर ले जाती है। यह मुक्त दशा ही मानव का मूल व्यक्तित्व है, जो सभी प्रकार के बाहरी आवरणों से दूर है। इसी संदर्भ

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

में शुक्ल जी कविता को ज्ञान तथा कर्मयोग के समकक्ष रखते है।

विशेष -

① शुक्ल जी ने कविता को मानव की सभी उच्चनताओं को दूर करने वाला बताया है।

② उक्त पंक्तियाँ रूसो के प्रकृति की ओर लौटो से प्रेरित है।

③ यही भाव प्रसाद के नाटक स्कन्दगुप्त में भी है। जब मातृगुप्त कहता है -

"कविता वर्णमय चित्र है।"

④ उक्त गद्यांश की भाषा तत्समी खड़ी बोली है।

⑤ गुप्तजी ने भी कविता को आनन्ददायिनी शिक्षिका के रूप में व्यक्त किया है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) कष्ट हृदय की कसौटी है, तपस्या अग्नि है। सम्राट! यदि इतना भी न कर सके तो क्या! सब क्षणिक सुखों का अंत है। जिसमें सुखों का अंत न हो, इसलिये सुख करना ही न चाहिये। मेरे जीवन के देवता! और उस जीवन के प्राप्य! क्षमा।

कृपया इस स्थान से कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ - प्रस्तुत पंक्तियाँ नवजागरण चेतना के प्रतीक जयशंकर प्रसाद के नाटक 'स्कन्दगुप्त' से ली गई है।

इन पंक्तियों में ऐतिहासिक छायावादी प्रेम तथा प्रत्यभिज्ञा दर्शन की झलक दिखाई देती है। ये पंक्तियाँ देवसेना द्वारा कथित है।

व्याख्या :- देवसेना, स्कन्दगुप्त से कहती है कि हृदय को कष्ट सेहना ही होता है। और इस कष्ट को सहर्ष स्वीकार करना भी चाहिए। देवसेना सुखों को क्षणिक मानते हुये सभी सुखों से दूर हो जाना चाहती है ताकि स्थायी आनन्द की प्राप्ति हो सके।

विशेष

इन पंक्तियों में प्रसाद के दर्शन प्रत्यभिज्ञावाद

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

की झलक है। जो कामायनी में भी है -

" समरस थे जड़ या चेतन सुन्दर साकार बना था।
चेतनता एक विलसती। आनन्द अखंड घना था।"

② इन पंक्तियों में छायावादी कि· अलिंग विरह वेदना का भी चित्रण है।

③ प्रस्तुत पंक्तियों में बौद्ध दर्शन के प्रतीत्यसमुत्पाद की भी झलक मिलती है अर्थात् इच्छा ही दुख का कारन है।

④ प्रस्तुत पंक्तियों की भाषा तत्समी खड़ी बोली है।

प्रासंगिकता - प्रस्तुत पंक्तियाँ क्षणिक सुखवाद का खंडन करके स्थायी आनन्द की ओर इशारा करती है। वर्तमान असंतुष्ट मनुष्य मानव भलाई अथवा परोपकार द्वारा यह आनन्द प्राप्त कर सकता है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) हमारा सृष्टि-संहार-कारक भगवान् तमोगुणजी से जन्म है। चोर, उलूक और लंपटों के हम एकमात्र जीवन हैं। पर्वतों की गुहा, शोकितों के नेत्र, मूर्खों के मस्तिष्क और खलों के चित्त में हमारा निवास है। हृदय के और प्रत्यक्ष, चारों नेत्र हमारे प्रताप से बेकाम हो जाते हैं। हमारे दो स्वरूप हैं, एक आध्यात्मिक और एक आधिभौतिक जो लोक में अज्ञान और अंधेरे के नाम से प्रसिद्ध हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ - प्रस्तुत पंक्तियाँ एक दुनिया समानान्तर नामक कहानी संग्रह की कहानी 'ओलाराम का जीव' से अवतरित है। इसके लेखक हरिशंकर परसाई है।

व्याख्या - लेखक स्पष्ट करते हुये कहते है कि समस्त विपरीत कर्म करनेवाले लोगों जैसे - चोर, लंपट तथा उल्लू के जीवन की भाँति भ्रष्टाचार का भी वही गुण है।

भ्रष्टाचार का वास सभ्य समाज से दूर ही संभव है। उसके प्रभाव में सब कार्य बेकाम हो जाते है।

विशेष

① उक्त पंक्तियों में विपरीत गुणों वाले मनुष्य की तुलना उल्लू से की गई है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(2) लेखक ने गहरी व्यंग्यात्मकता का प्रदर्शन किया है।

(3) भाषा तत्समी खड़ी बोली तथा सहज-सुपाठ्य है।

(4) सूत्र भाषा का प्रयोग किया गया है।

"चोर, उचक्के और लंपटों के हम एकमात्र जीवन है।"

(5) मुहावरे का प्रयोग -

बेकाम हो जाना - किसी काम का न रहना

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) जब हम अपने-आपको उन तमाम लोगों से बेहतर और ऊँचा समझते थे जो पिटी-पिटाई लकीरों पर चलते हुए अपनी सारी ज़िन्दगी एक बदनुमा और रिवायती घरौंदे की तामीर में बरबाद कर देते हैं, जिनके दिमाग हमेशा उस घरौंदे की चहारदीवारी में कैद रहते हैं जिनके दिल सिर्फ़ अपने बच्चों की किलकारियों पर ही झूमते हैं, जिनकी बेवकूफ बीवियाँ दिन-रात उन्हें तिगनी का नाच नचाती हैं और जिन्हें अपनी सफ़ेदपोशी के अलावा और किसी बात का कोई गम नहीं होता।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ - प्रस्तुत पंक्तियाँ नई कहानियों के संकलन एक दुनिया समानान्तर (राजेन्द्र यादव) की दूध और दवा (मार्कण्डेय) कहानी से ली गई है।

इन पंक्तियों में लेखक परम्परा की बुराई उजागर करता है।

व्याख्या - लेखक परम्परा में व्याप्त विद्रूपताओं को मानने से इन्कार करते हुये नवीनता की ओर जाने को कहता है। लेखक कहता है कि परम्परा का पालन करना कोई महान कार्य नहीं है क्योंकि परम्परा में फँसना व्यक्ति को सामाजिक क्रिया-कलापों में उलझा देता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विश्लेषण

(1) लेखक परम्परा का अंधानुकरण से बचने की सलाह देता है।

(2) लेखक स्पष्ट करता है कि यदि व्यक्ति कुछ नया करना चाहता है, तो परम्परा तथा सामाजिक बंधनों में बंधे रहकर नहीं कर पाता।

(3) उक्त पंक्तियों की भाषा बेहद गंभीर भाव तथा व्यंग्यात्मक है।

(4) तत्सम खड़ी बोली के साथ फारसी शब्दों का भी प्रयोग हुआ है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) जिस समाज में रात-दिन मेहनत करने वालों की हालत उनकी हालत से कुछ बहुत अच्छी न थी; और किसानों के मुकाबले में वे लोग, जो किसानों की दुर्बलताओं से लाभ उठाना जानते थे, कहीं ज्यादा सम्पन्न थे; वहाँ इस तरह की मनोवृत्ति का पैदा हो जाना कोई अचरज की बात न थी।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ - प्रस्तुत पंक्तियाँ हिन्दी कहानी के शिखर 'प्रेमचन्द' की चरम यथार्थवादी कहानी 'कफ़न' से ली गई है।

इन पंक्तियों में प्रेमचन्द ने समाज की विद्रूपताओं को अंकित किया है।

व्याख्या - प्रेमचन्द घीसू तथा माधव की कामचोर प्रकृति के संदर्भ में कहते हैं कि वे जानबूझकर काम नहीं करते हैं क्योंकि उनके साथ वाले दिन रात की मेहनत के पश्चात, भी उसी दशा में हैं तो बिना काम किये वे भी इसी दशा में रहना पसन्द करते हैं।

विशेष

(1) उक्त पंक्तियों के द्वारा प्रेमचन्द तत्कालीन

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

समाज की शोषणवादी नीतियों को उजागर करते है।

② ऐसा ही असमान वितरण रंगभूमि तथा गोदान में भी उपस्थित है।

③ फणीश्वरनाथ रेणु ने 'मैला आँचल' में इसी असमान वितरण को जमींदार-चक्र के द्वारा दर्शाया है।

④ उक्त पंक्तियों में गहरी व्यंग्यात्मकता है।

⑤ प्रेमचन्द की भाषा हिन्दुस्तानी का प्रतिनिधित्व करती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation